RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सूरदास : उनकी प्रेम पद्धति

दया शंकर कुमार

यू.जी.सी.–नेट / जे.आर.एफ.–2014

सूरदास प्रेम के कवि हैं । उनका प्रेम बहुमुखी है। वे सिर्फ श्रृंगार तक सीमित न रहकर वात्शल्य; सख्य तथा पशु पक्षी, पेड़–पौधा के प्रेम तक का विस्तृत वर्णन किया है। सूरदास ने जिस सीमित विषयों पर उन्होंने लेखनी चलायी है उनमें बड़े–से–बड़े कवि भी उनका मुकाबला नही कर सके । उन्होंने बालक कृष्ण की चंचल क्रीड़ाओं और युवा कृष्ण के श्रृंगार के सजीले चित्रों की एक पूरी प्रदर्शनी ही संजो दी है। निस्संदेह उन्होंने अपने आराध्य श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व के कतिपय विशिष्ट पक्षों के भीतर ही झाँका है किन्तु इन दोनों पक्षों में से कुछ भी ऐसा नहीं रहा जो उनकी कविता का हिस्सा न बना हो। सूरदास भावनाओं के कवि थे, उन्हें मानवीय भावों की पूरी और सही पहचान थी।

सूरदास के प्रेम–पक्ष के अन्तर्गत वात्सल्य, सख्य और दाम्पत्य तीनों भावों के संयोगात्मक वर्णनों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। भगवद्विषयक रति अर्थात् भक्ति के संदर्भ में ध्यातव्य है कि सूर साहित्य में दोनों भावों के आलंबन कृष्ण ही है। अतः उनकी भक्ति व प्रेम में कोई तात्विक भेद नहीं है।

1. वात्सल्य :

सूरदास वात्सल्य क्षेत्र के सम्राट हैं। उनके बाल चित्रण में छोटी से छोटी बात भी नहीं छूटी है। उन्होंने कृष्ण की बालसुलभ चेष्टाओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण किया है। श्रृंगार वर्णन की भांति उनका वात्सल्य वर्णन भी सांगोपांग है। वर्णन की स्वाभविकता उनके वात्सल्य पक्ष की विशेषता है। उनके पूर्व वात्सल्य केवल एक भाव था किन्तु सूरदास ने वात्सल्य को रस की कोटि प्रदान करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

क) रूप वर्णन
ख) क्रीड़ा, चेष्टा, मुद्राओं का वर्णन
ग) बाल स्वभाव का वर्णन
घ) संस्कारों का वर्णन
ड़) मातृहृदय का प्रकाशन

बाल चेष्टा के स्वाभाविक मनोहर चित्रों का इतना बड़ा भण्डार और कहीं नहीं है जितना सूरसागर में है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है:–

"सोभित कर नवनीत लिए।
घुटरूनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।"[1]

"मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह आजहूँ है छोटी।"[2]

सूरदास ने वात्सल्य के वियोग पक्ष के अन्तर्गत यशोदा और नन्द की मानसिक पीड़ा का विवेचना किया है। सूर–सागर में वियोग का आरम्भ ही वात्सल्य के वियोग–पक्ष से हुआ है। श्रीकृष्णा जब आक्रूर के साथ मथुरा चले गये और अतिशय प्रतीक्षा के बाद भी नहीं आए तो यशोदा दुखित मन से अपने पति नंद को फटकारती हैं :–

"नंद ब्रज लीजै ठोकि बजाय।
छेहु बिदा मिलि जाहिं मधुपुरी जहँ गोकुल के राय।"[3]

मातृ हृदय का प्रकाशन सूर ने जिस तन्मयता से किया है, यह विस्मित कर देने वाली है। आलोचक मानते हैं कि सूर स्वयं 'यशोदा' बनकर मातृ हृदय का प्रकाशन कर रहे हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं– "ऐसा लगता है कि यशोदा, यशोदा न रहीं मानो सूर हो गई और सूर, सूर न रहे, यशोदा हो गये।" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी सूर के इस गुण पर मोहित होकर कहते हैं–"हम बाल–लीला से भी बढ़कर जो गुण सूरदास में पाते हैं, वहहै उनका मातृ–हृदय–चित्रण। माता के कोमल हृदय में पैठने की अद्भुत–शक्ति है इस अन्धे में।"

यदि वात्सल्यकी दृष्टि से सूरदास कि तुलना अन्य कवियों से करें तो हम पाते हैं कि वात्सल्य भाव पर बहुत कम कवियों ने ही लिखा है। आदिकवि वाल्यमीकि, महाकवि कालिदास और रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे कवियों ने वात्सल्य के कुछ चित्र खींचे हैं किन्तु सूर के वात्सल्य वर्णन की सरलता और मनोहरता उनमें नहीं है। अंग्रेजी साहित्य में 'वर्ड्सवर्थ' और 'लोंगफेलो' को छोड़ दे तो वात्सल्य के चित्र अत्यंत विरल है। वात्सल्य के क्षेत्र में सूर की थोड़ी बहुत तुलना 'गोस्वामी तुलसीदास' से ही हो सकती है जिन्होंने 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' में राम के बाल्यपन का वर्णन किया है किन्तु सच यह है अन्य क्षेत्रों में तुलसी चाहे सूरदास से कहीं आगे हों, वात्सल्य में वे सूरदास के सामने नहीं ठहरते हैं।

2. सख्य :–

बाल–लीला के बाद गोप मित्रों के साथ गोचारण का मनोरम दृश्य आता है। सूरदास का सख्य वर्णन भी विश्व

RRIJM 2015, All Rights Reserved

साहित्य में बेजोड़ है। गोचारण के दृश्यों में सख्य, समानता, स्वच्छन्दता तथा मधुरता का भाव है। कृष्ण मुरली बजाकर सखाओं का मनोरंजन करते है। यमुना तट पर किसी बड़े पेड़ की शीतल छाया में बैठकर कभी सब सखा मिल–बाँटकर खाते हैं तो कभी इधर–उधर दौड़ते हैं। कृष्ण सखाओं के साथ खेलते–खेलते मस्ती के भाव में डूबे हुए हैं।

"चरावत वृन्दावन हरि धेनु।
ग्वाल सखा सब संग लगाए खेलत हैं करि चैनु।"[4]

ग्वाले कृष्ण से बार–बार बाँसुरी बजाने की जिद करते हैं– "छबीले मुरली नेंकु बजाउ"। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है–"अगर हम से कोई पूछे कि सूरसागर की सेन्ट्रल थीम क्या है, तो बिना हिचकिचाहट के चिल्ला उठेंगे – "छबीले मुरली नेंकु बजाउ।" बाल सखाओं के हार–जीत के खेल में जो स्वाभाविक व्यवहार की बातें हैं उनका वर्णन सूरदास इस प्रकार करते है :–

"खेलन मैं को काको गोसैयाँ।
हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबत ही कत करत रिसैयाँ।
जाति–पाँति हमतें बड़ नाहीं, नाहीं बसत सुम्हारी छैयाँ।
अति अधिकार जनावत यातें, जातें अधिक कुम्हारी गैयाँ।"[5]

कृष्ण के वियोग में ग्वाल सखाओं को भी विरह–दशा है। वे भी व्याकुल और अधीर होने के कारण कभी–कभी कृष्ण की निष्ठुरता पर खींझकर कहते हैं :–

"भए हरि मधुपुरी राजा, बड़े बंस कहाय।
राजभूषन अंग भ्राजत, अहिर कहत लजात।।"[6]

3. दाम्पत्य प्रेम :–

वृन्दावन के सुखमय जीवन के हास–परिहास के बीच गोपियों के प्रेम का उदय होता है। गोपियाँ कृष्ण के साथ खेलते–खेलते कृष्ण के सौन्दर्य व उनकी मनोहर चेष्टाओं पर मुगध होती चली जाती हैं। धीरे–धीरे उनमें हास–परिहास तथा छेड़छाड़ के साथ स्वभाविक रूप में प्रेम व्यापार होने लगता है।

सूरदास के यहाँ प्रेम की उत्पत्ति में रूप–लिप्सा और साहचर्य दोनों का योग है। बालक्रीड़ाएँ करते कृष्ण और गोपियों में स्वतः ही प्रेम का विकास हो जाता है। रूप का आकर्षण बाल्यावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है। राधा और कृष्ण के प्रेम में रूप का आकर्षण तो है ही, साथ ही परिचय व सहचर्य भी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं :– "हास परिहास और छेड़छाड़ के साथ प्रेम व्यापार का अत्यंत स्वाभविक आरंभ सूर ने दिखया है। किसी के रूप की चर्चा सुन या अकस्मात् किसी की एक झलक पाकर हाय–हाय करते हुए इस प्रेम का आरंभ नहीं हुआ है। नित्य अपने बीच चलते–फिरते, हँसते–बोलते, वन में गाय चराते देखते–देखते गोपियाँ कृष्ण में अनुरक्त होती हैं और कृष्ण गोपियों में।"[7]

"खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी
× × × × ×
औचक ही देखि तहँ राधा, नैन विसाल, भाल दिए रोरी।
सूर स्याम देखत ही राझे, नैन नैन मिलि परी ठगोरी।"[8] (रूप लिप्सा)

"बूझत स्याम, कौन तू गोरी।
कहाँ रहति, काकी तू बूटी? देखी नाहिं कहूँ ब्रज–खोरी।"[9] (परिचय)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूरदास के संयोग वर्णन को काफी सराहा है। वे कहते हैं– "वृन्दावन में कृष्ण और गोपियों का सम्पूर्ण जीवन क्रीड़ामय है और वह संपूर्ण क्रीड़ा संयोग पक्ष का है। संयोग सुख के जितने प्रकार के क्रीड़ा विधान हो सकते हैं वे सब सूर ने लाकर इकट्ठे कर दिये हैं। × × × × सूर का संयोग वर्णन एक क्षणिक घटना नहीं है, प्रेम संगीतमय जीवन की एक गहरी चलती धारा है जिसमें अवगाहन करने वाले को दिव्य माधुर्य के अतिरिक्त और कहीं कुछ नहीं दिखाई पड़ता।" साहयर्चमूलक संयोग श्रृगार का एक उदाहरण दृष्टव्य है :–

"धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।
मेहन कर तें धार चलति पय, मोहिनि मुख अति ही छवि बाढ़ी।।"[10]

अततः कहा जा सकता है कि निःसंदेह प्रेम नाम की मनोवृत्ति का जैसा विस्तृत और पूर्ण परिज्ञान सूरदास को था वैसा और किसी कवि को नहीं। सूर को सारा संयोग वर्णन लम्बी चौड़ी प्रेमचर्या है जिसमें आनन्दोल्लासके न जाने कितने स्वरूपों का विधान है। रासलीला, मानलीला सभी इसके अन्तर्गत आते है। संयोग श्रृंगार के अंतर्गत सूरदासने राधा–कृष्ण की शारीरिक क्रीड़ाओं का वर्णन भी भरपूर किया है।

संदर्भ :–

1.सूर सागर, 717
2.भ्रमरगीत सार/आचार्य शुक्ल/सन्1982/पृष्ठ –16
3.भ्रमरगीत सार/आचार्य शुक्ल/सन्1982/पृष्ठ –22
4.भ्रमरगीत सार/आचार्य शुक्ल/सन्1982/पृष्ठ –15

5.भ्रमरगीत सार/आचार्य शुक्ल/सन्1982/पृष्ठ –16
6.भ्रमरगीत सार/आचार्य शुक्ल/सन्1982/पृष्ठ –23
7.भ्रमरगीत सार/आचार्य शुक्ल/सन्1982/पृष्ठ –17
8.सूर सागर, 1290
9.सूर सागर, 497
10.उपरिवत्/पृष्ठ –173

RRIJM 2015, All Rights Reserved